
मनोज
कॉमिक्स
मूल्य 7.00
खून की बारिश
भूत प्रेत
तन्त्र मन्त्र
जादू टोना

Hi
Here's a place where you'll get all the comics you missed out on from Nagraj, Doga, Pinki Chacha Chaudhary, Ram-Rahim, Tinkle, Amar Chitra Katha and many more..
Special weekly Fests of Superheroes where you get there memorable comics and other stuff.
Just spreading the word to bring old passion back!
Join the only Rocking Fan Nation .
RFN-Raj Comics Fan Nation.

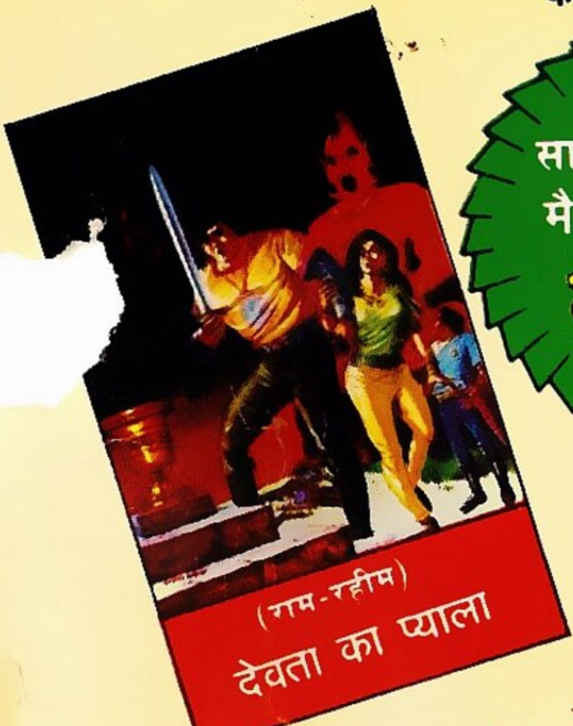
Http://www.orkut.com/Community.aspx?cmm =63751321



मनोज कॉमिक्स

का आगामी सैट

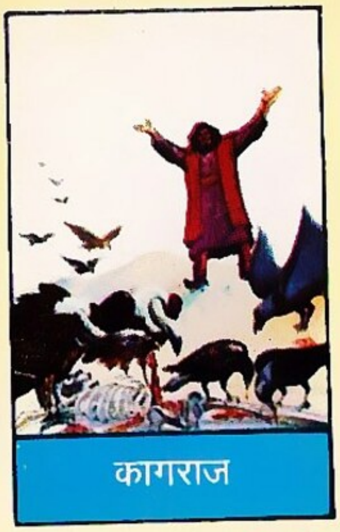
दोनों के साथ एक-एक मैग्नेट स्टीकर **मुफ्त**

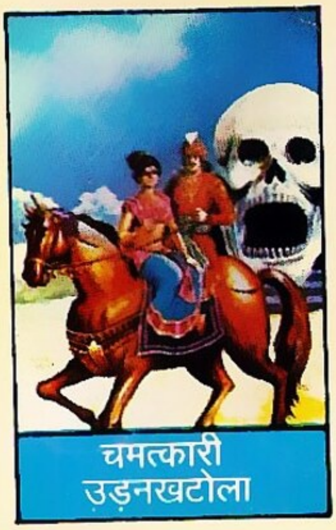




चारों के साथ एक-एक स्टीकर मुफ्त









नये सैट के कॉमिक्स

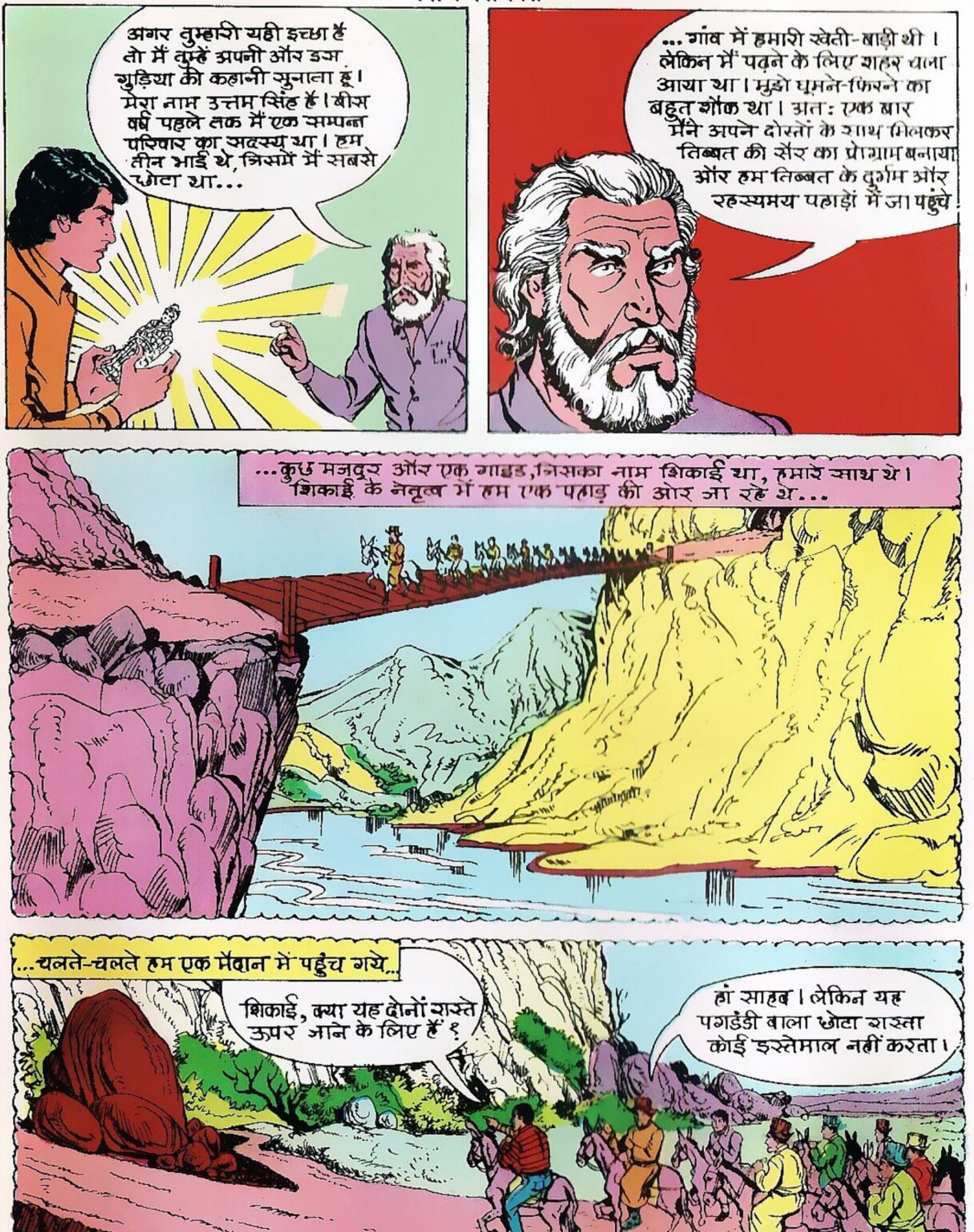
खूनी दानव की वापसी	(महाबली शेरा)	एक मैग्नेट स्टीकर मुफ्त
त्रिकालदेव और पिशाचराज	(त्रिकालदेव)	एक मैग्नेट स्टीकर मुफ्त
क्रुकबाण्ड और विलायती जासूस	क्रुकबाण्ड	एक स्टीकर मुफ्त
खून की बारिश	(भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र)	एक स्टीकर मुफ्त
देवता की मौत	(थ्रिल-एक्शन-एडवेंचर)	एक स्टीकर मुफ्त
मौत से टक्कर	(अमर-अकबर)	एक स्टीकर मुफ्त

प्रकाशक : मनोज पॉकेट बुक्स, 1584 दरीबा कलां, दिल्ली-110 006
वितरक : राजा सेल्स कार्पोरेशन, 25/128, अग्रवाल मार्ग, शक्ति नगर, दिल्ली-110 007


खून की बारिश
कथानक: अन्सार अख्तर चित्रांकन: A.R.V.B


आधी रात का समय था। किशोर लाल क्लब से वापस घर लौट रहा था।
अरे! यह सड़क के बीचो-बीच कौन पड़ा है?
उसके निकट कार रोककर—
ओह! यह तो बेहोश है।
अ... आह!
ओह! इसे होश आ रहा है।
क्या हुआ बाबा? यहां कैसे गिर पड़े?
कुछ नहीं बेटा, जरा चक्कर आ गया था। तुम जरा मेरी मदद करो। नजदीक ही मेरा घर है, मुझे वहां पहुंचा दो।
किशोर लाल भला व्यक्ति था। वह बूढ़े को उसके घर ले आया।
उधर बिस्तर पर लिटा दो मुझे।


बेटा, जरा उस संदूक में से मेरा कम्बल निकाल दो।
अच्छा बाबा।
जैसे ही उसने ट्रंक खोलकर कम्बल उठाया।
ओह! यह अजीब-सी गुड़िया कैसी है?
यह लगभग पांच इंच की एक छोटी-सी गुड़िया थी। और आश्चर्य की बात यह थी कि वह गुड़िया हीरों की बनी हुई थी। उसके बनाने में तीन बड़े हीरे इस्तेमाल किए गये थे। उन हीरों को तराशकर आपस में इस तरह जोड़ा गया था कि गुड़िया की आकृति बन गई थी।
इस गुड़िया को वहीं रख दो बेटा। यह मनहूस है।
यह गुड़िया तुम्हारी है बाबा?
हां, यह मेरी है।
मगर यह तो बहुत कीमती है? तुम्हारे पास कहां से आई?
तुमने ठीक कहा, यह बहुत कीमती है। इसकी कीमत लाखों में मिल सकती है। लेकिन जब से यह मेरे पास आई है, मैं बरबाद हो गया हूं। मेरा सबकुछ तबाह हो चुका है।
मैं कुछ समझा नहीं बाबा। मुझे इस गुड़िया के विषय में कुछ बताओ।


अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं तुम्हें अपनी और इस गुड़िया की कहानी सुनाता हूं। मेरा नाम उत्तम सिंह है। बीस वर्ष पहले तक मैं एक सम्पन्न परिवार का सदस्य था। हम तीन भाई थे, जिसमें मैं सबसे छोटा था...
...गांव में हमारी खेती-बाड़ी थी। लेकिन मैं पढ़ने के लिए शहर चला आया था। मुझे घूमने-फिरने का बहुत शौक था। अतः एक बार मैंने अपने दोस्तों के साथ मिलकर तिब्बत की सैर का प्रोग्राम बनाया और हम तिब्बत के दुर्गम और रहस्यमय पहाड़ों में जा पहुंचे।
...कुछ मजदूर और एक गाइड, जिसका नाम शिकाई था, हमारे साथ थे। शिकाई के नेतृत्व में हम एक पहाड़ की ओर जा रहे थे...
...चलते-चलते हम एक मैदान में पहुंच गये...
शिकाई, क्या यह दोनों रास्ते ऊपर जाने के लिए हैं?
हां साहब। लेकिन यह पगडंडी वाला छोटा रास्ता कोई इस्तेमाल नहीं करता।


क्यों, उस रास्ते पर क्या है?
साहब, यहां के लामाओं का मानना है कि यह रास्ता बहुत मनहूस है। इस मार्ग पर एक पहाड़ी गुफा है, जिसमें दुर्भाग्य के देवता की मूर्ति स्थापित है।
सब बकवास बातें हैं। मैं ऐसी बातों पर विश्वास नहीं करता। हम इसी रास्ते से चलेंगे।
नहीं साहब! हम इस मार्ग पर नहीं जा सकते।
मैंने बहुत समझाने की कोशिश की, मगर शिकाई और दूसरे मजदूर उस रास्ते पर चलने के लिए राजी नहीं हुए...
...लेकिन मैं भी जिद्दी स्वभाव का था। मैंने उसी मार्ग पर जाकर देखने का निर्णय कर लिया और उसी मैदान में पड़ाव डलवा दिया। रात को मैंने अपने दोनों मित्रों से भी साथ चलने की बात की...
हम तीनों पैदल चलकर देख आते हैं कि ऊपर क्या है?
नहीं भाई, मैं तो नहीं जाऊंगा।
मुझे भी नहीं जाना।
ठीक है! मैं अकेला ही जा रहा हूं, सुबह तक लौट आऊंगा।
मत जाओ उत्तम!
रुक जाओ।
...मगर मैंने उनकी बात नहीं सुनी और उस मार्ग पर चल पड़ा...


...काफी चढ़ाई चढ़ने के बाद जब मैं एक मोड़ पर घूमा...
ओह! यह क्या है ?
बड़ी अजीब गुफा है, अंदर रोशनी भी है! शायद इसके भीतर कोई रहता है।
...तभी हवा का एक तेज झोंका आया और मेरे कानों से एक स्वर टकराया...
वापस चले जाओ...
यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है।
सांय
...लेकिन मैंने इसे अपना वहम समझा और उस गुफा में प्रविष्ट हो गया...
यह मशालें, अवश्य ही यहां कोई इंसान रहता है।
...गुफा एक गोल कमरे जैसी जगह पर जाकर समाप्त हो गई थी...
ओह! मूर्ति...।


SUPER COMMANDO
DHRUVA
T.M & © RAJA POCKET BOOKS
We bring back d janoon...
RFN

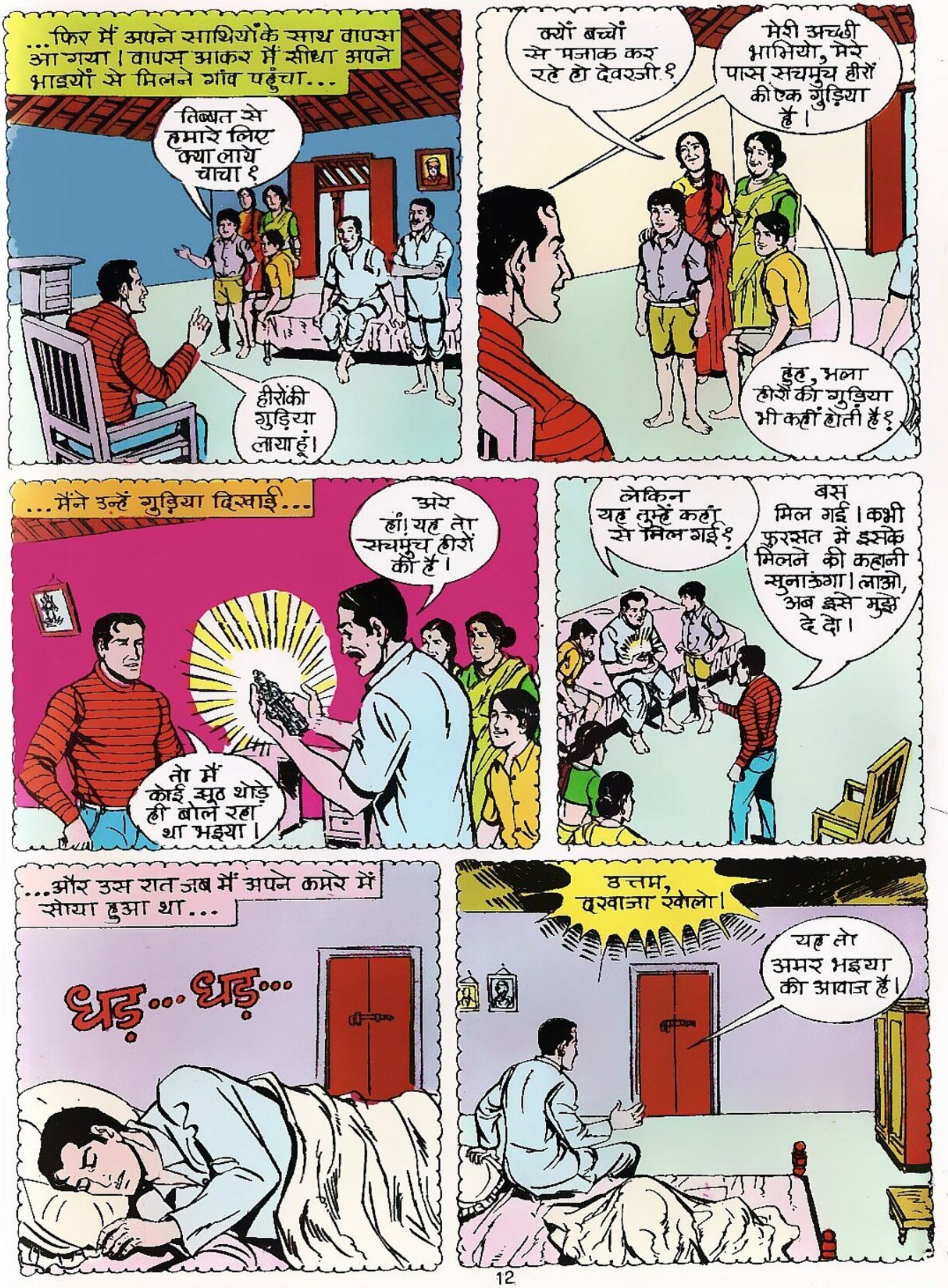

...लेकिन वहाँ कोई नहीं था। मूर्ति को निकट से देखने के लिए मैं उसकी ओर बढ़ा...
शिकारी शायद इसी मूर्ति को दुर्भाग्य का देवता कह रहा था।
ओह! यह इसकी छाती में क्या चमक रहा है?
हे भगवान्! यह तो हीरों की गुड़िया है, तभी इस तरह चमक रही है। इतने बड़े हीरे तो लाखों के होंगे।
...मूर्ति की छाती से गुड़िया निकालने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया ही था कि...
फुस्स

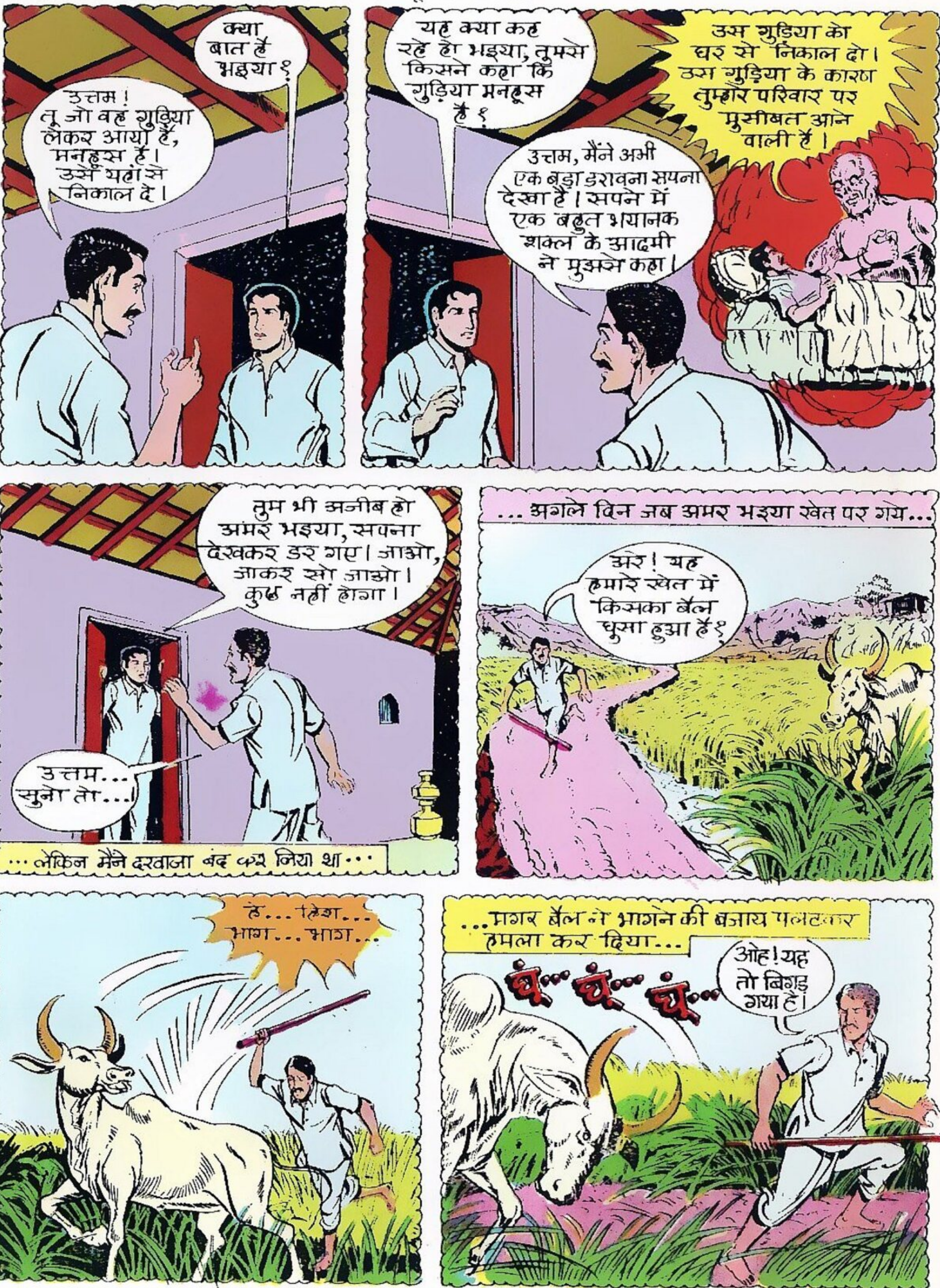

ओह!
फुस्स
...सांप को देखकर मैंने पिस्तौल निकाली और...
धांय
...सांप को मारकर मैंने मूर्ति की छाती से गुड़िया बाहर निकाल ली...
...गुड़िया मेरे हाथ में आते ही सुरंग में इतनी तेज गड़गड़ाहट की आवाज गूंजी, जैसे बहुत से पत्थर आपस में टकरा रहे हों।
गड़...
गड़...
गड़...
ओह! यह क्या हुआ?
...तभी अचानक वहां जल रही मशालें अपने आप बुझ गईं...
भक
उफ!

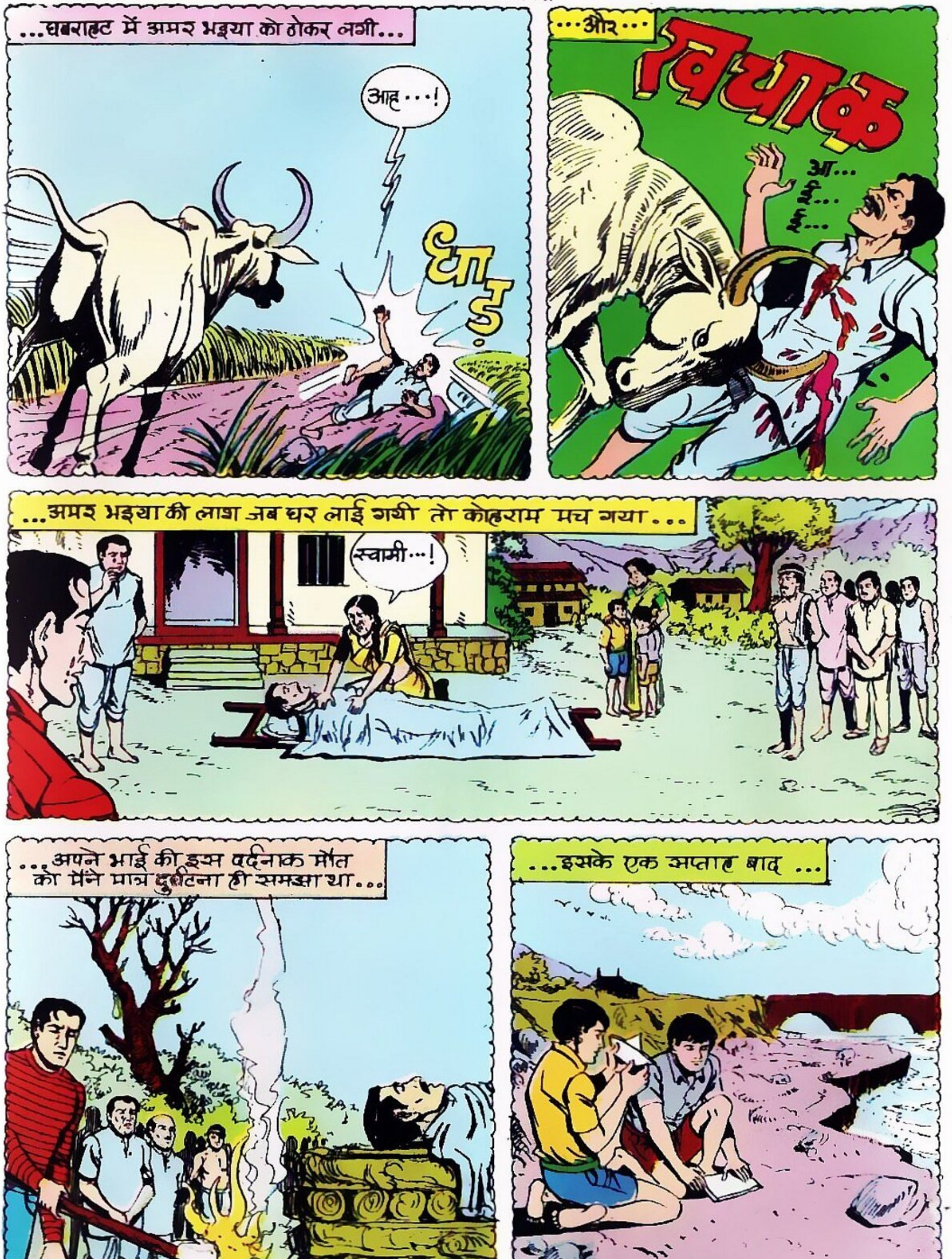

...मैं घबराकर बाहर की ओर भागा। मैं जहां-जहां से गुजरता जा रहा था, मेरे पीछे मशालें अपने आप जलती जा रही थीं...
...और फिर मैं सुरक्षित गुफा से बाहर निकल आया...
बहुत कीमती चीज हाथ लगी है।
...गुड़िया पाने की खुशी में मैं सुरंग में पेश आने वाली रहस्यमय घटनाओं को भूल गया और तुरंत ही अपने कैम्प की ओर वापस चल पड़ा...
मैं इस गुड़िया के बारे में किसी को नहीं बताऊंगा। इसे मैंने हासिल किया है, इसलिए इस पर सिर्फ मेरा हक है।
...तभी...
रुक जाओ।
ओह!
लाओ, वह गुड़िया मुझे दे दो। तुम उसे यहां से नहीं ले जा सकते।
त...तुम कौन हो?
सवाल मत पूछो। वह गुड़िया मुझे दे दो, इसी में तुम्हारी भलाई है।
मेरी भलाई तो वह गुड़िया यहां से ले जाने में है। उसे बेचकर मैं लाखों रुपये प्राप्त कर सकता हूं।


...यह कहकर...
मेरा रास्ता छोड़ो।
उफ !
धाड़
...उसे गिराकर मैं वहां से भाग खड़ा हुआ...
रुक जाओ... मेरी बात सुनो।
...भिक्षु मुझे आवाज़ देता रह गया, लेकिन मैंने मुड़कर भी नहीं देखा और गिरता-पड़ता अपने कैम्प तक जा पहुंचा। मेरे दोस्त मेरी प्रतीक्षा में जाग रहे थे...
उत्तम सिंह, तुम आ गये?
हां, आ गया।
क्या देखा ऊपर जाकर?
...मैंने उन्हें कुछ भी नहीं बताया और थकान का बहाना बनाकर अपने टैंट में जाकर लेट गया...
सुबह होते ही मैं सबसे वापस चलने को कहूंगा, क्योंकि इस कीमती गुड़िया को साथ लेकर इन पहाड़ों में भटकना उचित नहीं होगा।
...कुछ देर बाद कोई आहट सुनकर मेरी आंखें खुलीं...
ओह! तुम...?
हां। मैं तुम्हें यह बताने आया हूं कि सिंघाल ने कड़ी तपस्या की थी, तब उसकी प्रेमिका मोरना उसे मिली थी। तुम मोरना को सिंघाल से जुदा नहीं कर सकते।
तुम किस मोरना की बात कर रहे हो?

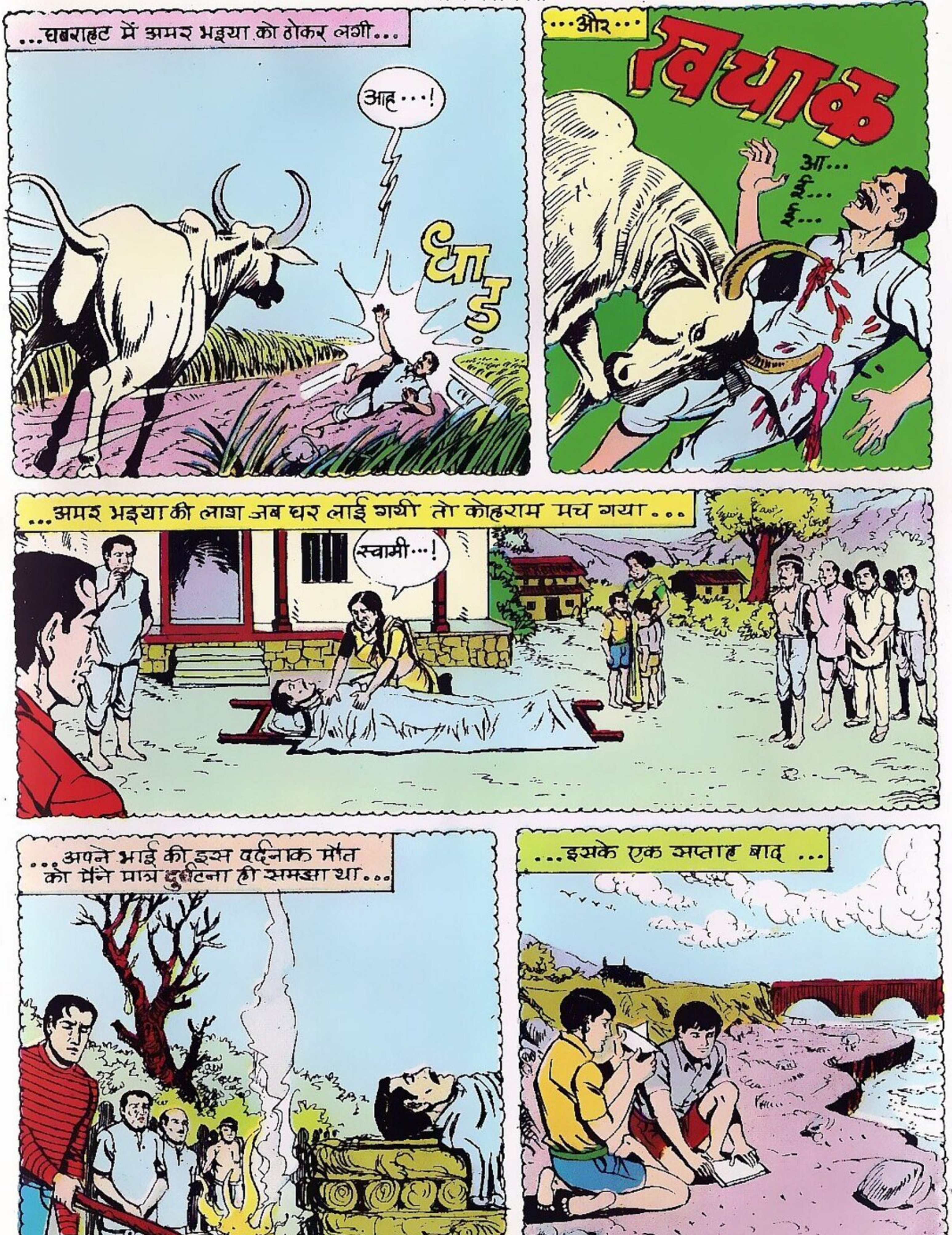

उसी की, जिसे तुम सिंघाल की प्रतिमा की छाती से निकालकर लाए हो। सिंघाल की कहानी बहुत लम्बी है। मैं तुम्हें संक्षेप में बता रहा हूं। उसने पूरे जीवन मोरना को चाहा, लेकिन हीरे जैसी मोरना कुरूप सिंघाल की ओर आकर्षित नहीं हुई...
...तब सिंघाल ने प्रार्थना की कि मोरना उसे मिल जाए, चाहे उसका जीवन छीन लिया जाए। फिर मोरना उसे मिल गई, लेकिन वह स्वयं पत्थर बन गया। तब मोरना भी गुड़िया बनकर उसकी छाती में समा गई। तुमने मोरना को सिंघाल की छाती से निकालकर घोर पाप किया है। उसे वापस कर दो।
बंद करो यह बकवास। मेरे पास कोई मोरना-वोरना नहीं है। निकल जाओ यहां से, वरना गोली मार दूंगा।
ठीक है, मैं चला जाता हूं, मगर इतना सुन लो, सिंघाल दुर्भाग्य का देवता है। तुमने उसका दिल चुराया है, वह तुम्हें चैन से नहीं रहने देगा। तुम्हारी बेहतरी इसी में है कि तुम उसे वापस कर दो।
निकल जाओ यहां से, मुझे तुम्हारी बकवास नहीं सुननी।
जाता हूं, मगर अब तुम सिंघाल के कहर से नहीं बच सकोगे।


...फिर मैं अपने साथियों के साथ वापस आ गया। वापस आकर मैं सीधा अपने भाइयों से मिलने गांव पहुंचा...
तिब्बत से हमारे लिए क्या लाये चाचा?
हीरों की गुड़िया लाया हूं।
क्यों बच्चों से मजाक कर रहे हो देवरजी?
मेरी अच्छी भाभियो, मेरे पास सचमुच हीरों की एक गुड़िया है।
हुंह, भला हीरों की गुड़िया भी कहीं होती है?
...मैंने उन्हें गुड़िया दिखाई...
अरे हां! यह तो सचमुच हीरों की है।
तो मैं कोई झूठ थोड़े ही बोल रहा था भइया।
लेकिन यह तुम्हें कहां से मिल गई?
बस मिल गई। कभी फुरसत में इसके मिलने की कहानी सुनाऊंगा। लाओ, अब इसे मुझे दे दो।
...और उस रात जब मैं अपने कमरे में सोया हुआ था...
धड़... धड़...
उत्तम, दरवाजा खोलो।
यह तो अमर भइया की आवाज है।


क्या बात है भइया ?
उत्तम! तू जो वह गुड़िया लेकर आया है, मनहूस है। उसे यहां से निकाल दे।
यह क्या कह रहे हो भइया, तुमसे किसने कहा कि गुड़िया मनहूस है ?
उत्तम, मैंने अभी एक बड़ा डरावना सपना देखा है। सपने में एक बहुत भयानक शक्ल के आदमी ने मुझसे कहा।
उस गुड़िया को घर से निकाल दो। उस गुड़िया के कारण तुम्हारे परिवार पर मुसीबत आने वाली है।
तुम भी अजीब हो अमर भइया, सपना देखकर डर गए। जाओ, जाकर सो जाओ। कुछ नहीं होगा।
उत्तम... सुनो तो...!
...लेकिन मैंने दरवाजा बंद कर लिया था...
...अगले दिन जब अमर भइया खेत पर गये...
अरे! यह हमारे खेत में किसका बैल घुसा हुआ है ?
हे... हिश... भाग... भाग...
...मगर बैल ने भागने की बजाय पलटकर हमला कर दिया...
घ...घ...घ...
ओह! यह तो बिगड़ गया है।

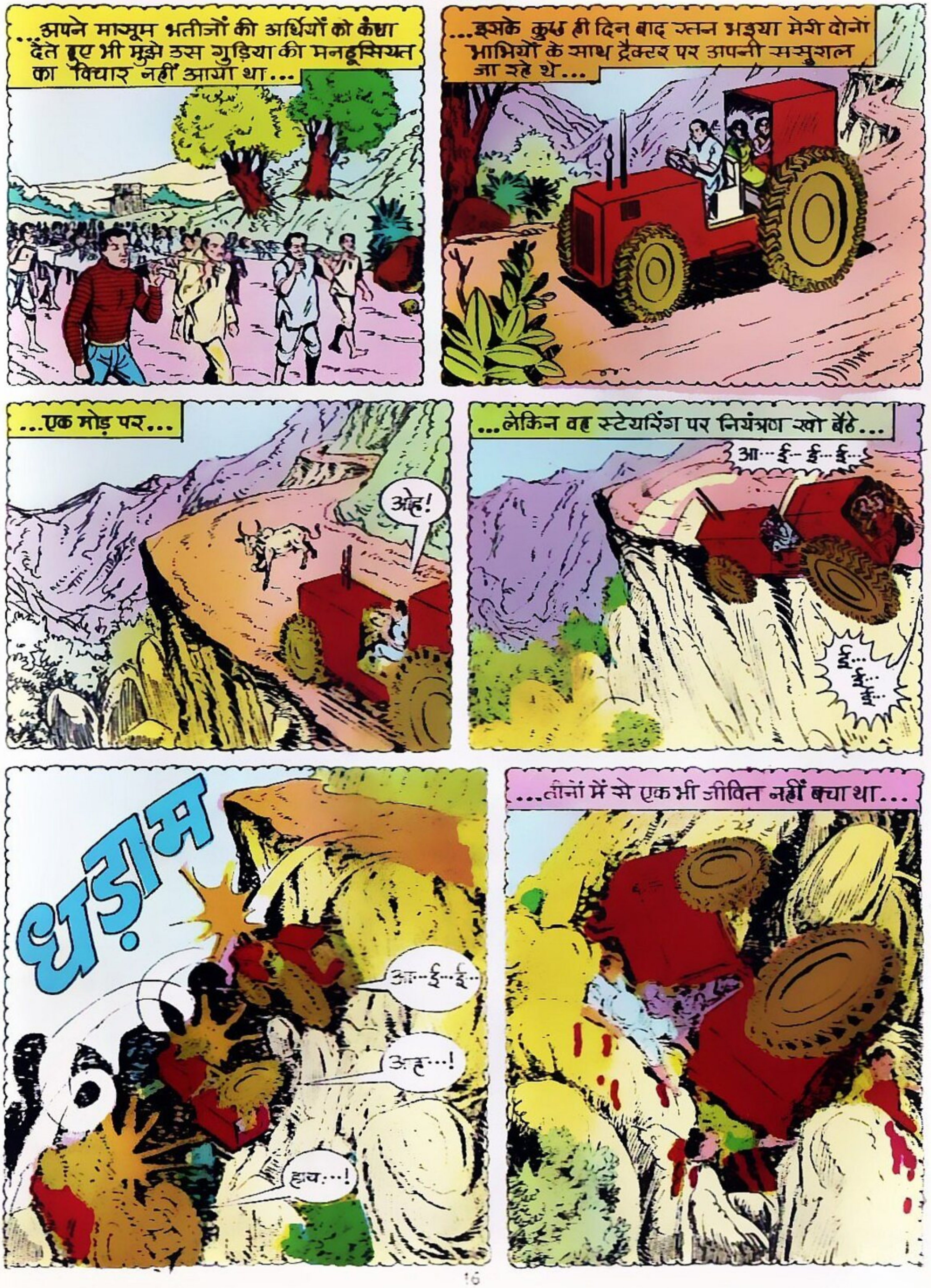

...घबराहट में अमर भइया को ठोकर लगी...
आह...!
धाड़
...और...
खचाक
आ... ई... ई...
...अमर भइया की लाश जब घर लाई गयी तो कोहराम मच गया...
स्वामी...!
...अपने भाई की इस दर्दनाक मौत को मैंने मात्र दुर्घटना ही समझा था...
...इसके एक सप्ताह बाद ...


गोपाल, मैं यह किश्ती पानी में छोड़कर आता हूं।
...किश्ती छोड़ते हुए अचानक शंकर का पांव फिसला...
आ...ई... ई...ई...
घबरा मत शंकर, मैं आ रहा हूं।
गड़प
छपाक
...गोपाल थोड़ा-बहुत तैरना जानता था, मगर शंकर ने उसे कुछ इस तरह पकड़ लिया था कि वह भी गोते खाने लगा था...
गड़प
गड़प
...और वह दोनों डूब गये...


...घबराहट में अमर भइया को ठोकर लगी...
आह...!
धाड़
...और...
खचाक
आ...
ई...
ई...
...अमर भइया की लाश जब घर लाई गयी तो कोहराम मच गया...
स्वामी...!
...अपने भाई की इस दर्दनाक मौत को मैंने मात्र दुर्घटना ही समझा था...
...इसके एक सप्ताह बाद ...



गोपाल, मैं यह किश्ती पानी में छोड़कर आता हूं।
...किश्ती छोड़ते हुए अचानक शंकर का पांव फिसला...
आ...ई... ई...ई...
घबरा मत शंकर, मैं आ रहा हूं।
गड़प
छपाक
...गोपाल थोड़ा-बहुत तैरना जानता था, मगर शंकर ने उसे कुछ इस तरह पकड़ लिया था कि वह भी गोते खाने लगा था...
गड़प
गड़प
...और वह दोनों डूब गये...

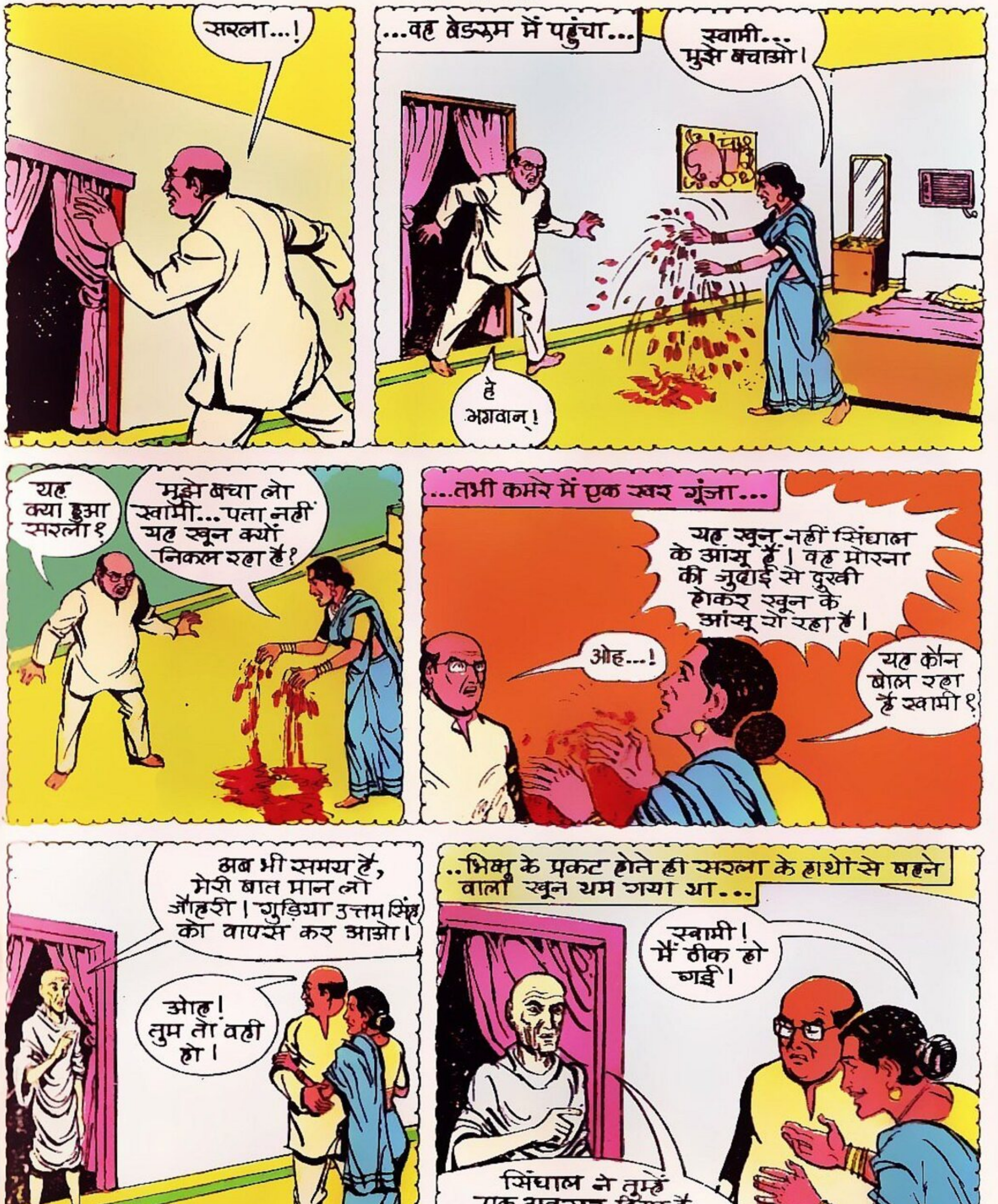

...अपने मासूम भतीजों की अर्थियों को कंधा देते हुए भी मुझे उस गुड़िया की मनहूसियत का विचार नहीं आया था...
...इसके कुछ ही दिन बाद रतन भइया मेरी दोनों भाभियों के साथ ट्रैक्टर पर अपनी ससुराल जा रहे थे...
...एक मोड़ पर...
ओह!
...लेकिन वह स्टेयरिंग पर नियंत्रण खो बैठे...
आ...ई...ई...ई...
धड़ाम
आ...ई...ई...
आह...!
हाय...!
...तीनों में से एक भी जीवित नहीं बचा था...


...इस घटना के बाद मैं बिल्कुल टूट चुका था। एक सुबह गांव का जमींदार मेरे पास आया और उसने मुझे कुछ कागजात दिखाए...
तुम्हारे भाइयों ने अपनी जमीन और यह मकान मेरे पास गिरवी रखकर एक बड़ी रकम उठाई थी। अब वह दोनों तो रहे नहीं, या तो तुम मेरा कर्ज चुका दो, या फिर जमीन और मकान का कब्जा मुझे दे दो।
...कर्ज चुकाने के लिए मेरे पास रकम तो थी नहीं और अब गांव में मेरा कोई रह भी नहीं गया था, इसलिए मैंने जमीन और मकान जमींदार के हवाले करने का फैसला कर लिया, लेकिन उसी रात जब मैं सो रहा था...
धड़... धड़... धड़...
ओह! कोई खिड़की पर है।
...मैंने उठकर खिड़की खोली...
अरे! यहां तो कोई भी नहीं है।
...तभी...
हा...हा...हा...! कैसे हो उत्तम सिंह?
त...त... तुम?
हां। मैं तुम्हारी बर्बादी का तमाशा देखने आया हूं। याद है, मैंने कहा था, मोरना जिसके पास रहेगी, वह बर्बाद हो जाएगा।
म... मोरना?
हां उत्तम सिंह। जब तक वह तुम्हारे पास रहेगी, तुम्हारी मुसीबतें खत्म नहीं होंगी। उसे वापस पहुंचा दो, इसी में तुम्हारी भलाई है।


...यह कह भिक्षु अचानक गायब हो गया था...
ओह! चला गया!
...तब पहली बार मुझे महसूस हुआ कि वह गुड़िया वाकई में मनहूस थी...
यह सब कुछ इसी गुड़िया के कारण हुआ है। अब मैं इसे अपने पास नहीं रखूंगा। कल ही शहर जाकर इसे किसी के हाथ बेच दूंगा।
...अगले दिन मकान और जमीन जमींदार को सौंपकर मैं शहर चला आया और सीधा एक जौहरी की दुकान पर पहुंचा...
ओह! यह तुम्हारे पास कहां से आई?
कहीं से भी आई हो! तुम इसे खरीद रहे हो या नहीं?
मैं चोरी का माल नहीं खरीदता, भाग जाओ यहां से।
यह चोरी की नहीं है भाई! मेरी अपनी है। मैं आजकल मुसीबत में हूं, इसीलिए इसे बेचना चाहता हूं।
...और उस जौहरी ने मेरी मजबूरी का पूरा-पूरा लाभ उठाया...
अच्छा ठीक है, मैं इसे खरीद लेता हूं, लेकिन पचास हजार रुपये से ज्यादा नहीं दूंगा।
पचास हजार!
...उस हालात में मेरे लिए पचास हजार भी बहुत थे और उस मनहूस गुड़िया से पीछा भी छूट रहा था, इसलिए मैं राजी हो गया...
...उसी रात जब वह जौहरी दुकान से अपने घर लौट रहा था...
आज बहुत बढ़िया चीज हाथ लगी है, असली हीरों की वह गुड़िया लाखों रुपये की बिकेगी। कल से ही उसके लिए ग्राहक की तलाश करता हूं।

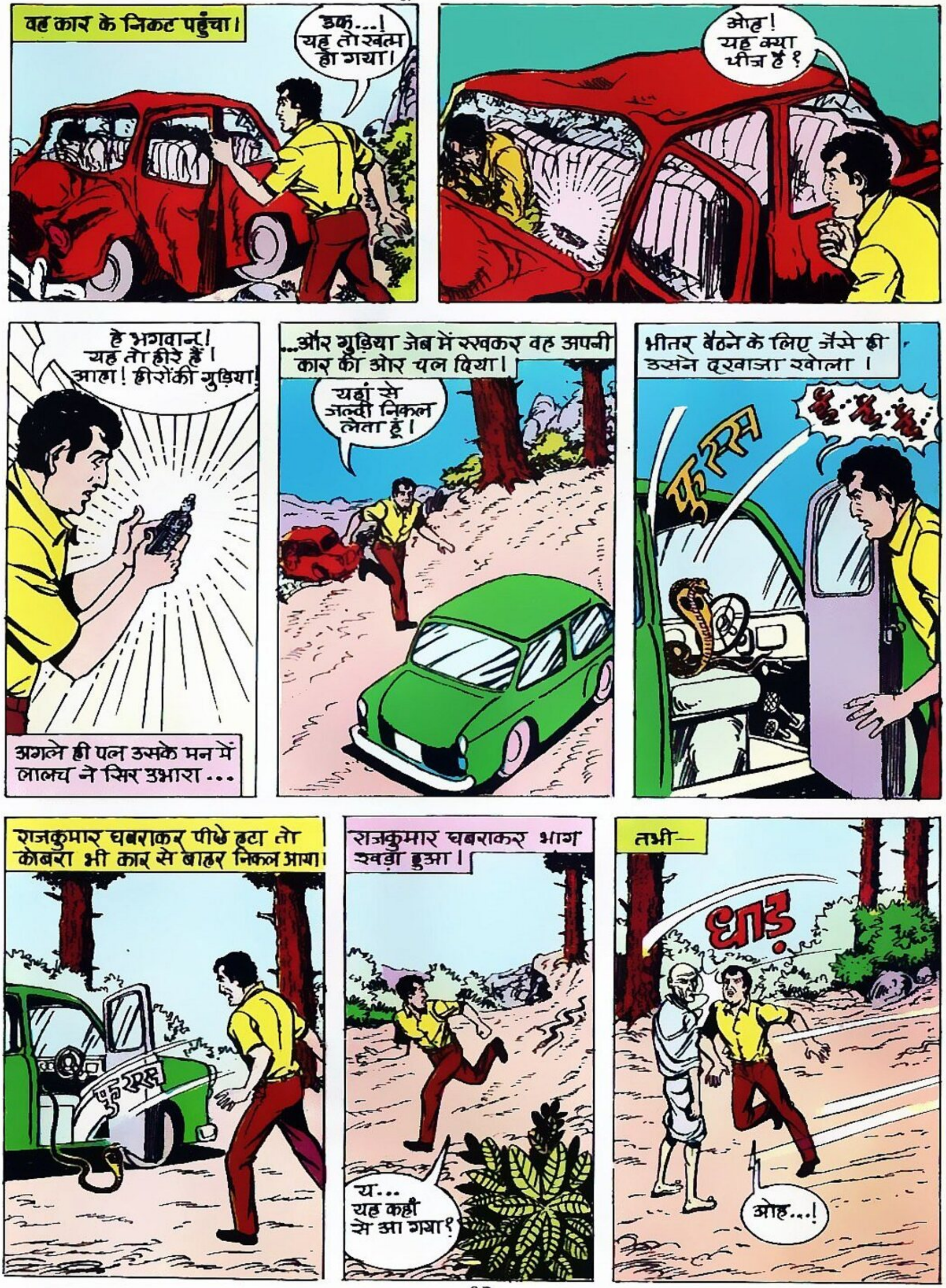

We bring back d janoon...
RFN


...तभी...
ओह! यह कौन है?
चर्र... चर्र...
तू अपनी मौत खरीद कर ले जा रहा है मूर्ख। वह गुड़िया तेरी बर्बादी का कारण बन जाएगी। जा, इसे उत्तमसिंह को वापस कर दे।
क्या बक रहे हो? कौन हो तुम?
मैं सिंघाल का सेवक हूं। उसकी प्रेमिका मोरना इस वक्त तेरे पास है, इसलिए तुझे चेताने आया हूं कि तू नष्ट हो जाएगा। अगर बर्बादी से बचना चाहता है तो हीरे की वह गुड़िया उत्तमसिंह को लौटा दे।
...मगर जौहरी ने भिक्षु की बात पर ध्यान नहीं दिया और गाड़ी आगे बढ़ा दी...
पागल है साला। मगर इसे कैसे पता चला कि मैंने कोई गुड़िया खरीदी है?
मेरी बात मान ले मूर्ख...!
...और उसी रात जब जौहरी अपनी स्टडी में बैठा कुछ हिसाब-किताब लगा रहा था...
टप
टप
ओह...!
ओह! यह खून कहाँ से आया?
...तभी...
आ...ई...ई...ई...

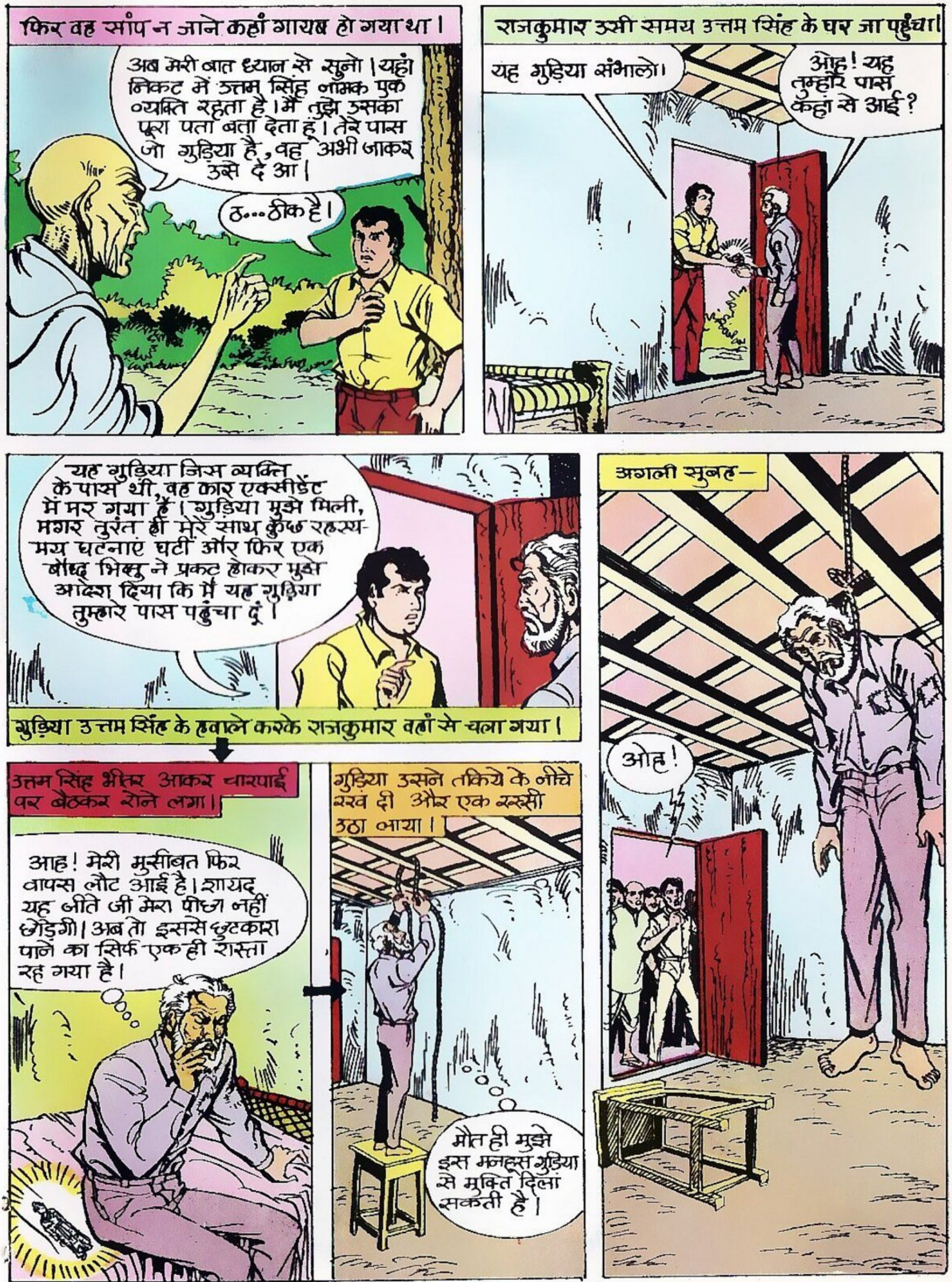

सरला...!
...वह बेडरूम में पहुंचा...
स्वामी... मुझे बचाओ।
हे भगवान्!
यह क्या हुआ सरला?
मुझे बचा लो स्वामी... पता नहीं यह खून क्यों निकल रहा है?
...तभी कमरे में एक स्वर गूंजा...
यह खून नहीं सिंघाल के आंसू हैं। वह मोरना की जुदाई से दुखी होकर खून के आंसू रो रहा है।
ओह...!
यह कौन बोल रहा है स्वामी?
अब भी समय है, मेरी बात मान लो जौहरी। गुड़िया उत्तम सिंह को वापस कर आओ।
ओह! तुम तो वही हो।
..भिक्षु के प्रकट होते ही सरला के हाथों से बहने वाला खून थम गया था...
स्वामी! मैं ठीक हो गई।
सिंघाल ने तुम्हें एक अवसर दिया है जौहरी। सुबह तक तुमने गुड़िया उत्तम सिंह को वापस न की तो यह खून फिर से बहने लगेगा। और फिर मौत, सिर्फ मौत!


न ... नहीं। मैं वह गुड़िया वापस कर दूंगा।
तो जाओ, अभी जाकर उस गुड़िया को वापस कर आओ। उत्तम सिंह का पता मैं तुम्हें बताता हूं।
...मैं एक होटल में ठहरा हुआ था। आधी रात के समय जौहरी वहां आ पहुंचा और गुड़िया मेरे बेड पर फेंक दी...
संभालो इस खूनी गुड़िया को और मेरी रकम वापस करो।
...उसने मुझे अपने साथ घटी सभी घटनाएं भी सुनाई थीं...
...बस तभी से यह मनहूस गुड़िया मेरे पास है। मेरी समझ में नहीं आता कि इसका क्या करूं, इससे पीछा छुड़ाने के लिए मैंने कई बार इसे गटर में फेंका, समुद्र में डाला, लेकिन हर रात यह अपने आप मेरे पास पहुंच जाती है। और अधेड़ उम्र में ही मैं बूढ़ा हो गया हूं।
किशोर लाल को इस कहानी पर विश्वास नहीं आया था। उत्तम सिंह को दीवाना समझते हुए उसने उस कीमती गुड़िया को हासिल करने का मन बना लिया।
सुनो बाबा! अगर तुम इस गुड़िया से इतने ही परेशान हो तो इसे मुझे दे दो।
मेरी कहानी सुनने के बाद भी तुम इस मनहूस गुड़िया को ले जाना चाहते हो?
हां बाबा। और मैं तुम्हें इसकी कीमत भी दूंगा। मेरे पास इस वक्त जितनी भी रकम है, सब तुम ले लो।
ठीक है।
किशोर लाल ने अपनी जेब खाली कर दी और गुड़िया लेकर रवाना हो गया।
वह बूढ़ा सचमुच पागल था। कहीं से उसके हाथ यह गुड़िया लग गई होगी और दीवानेपन में उसने इसे मनहूस समझ लिया। खैर, जो भी है, अब यह गुड़िया मेरी है। मैं इसे बेचकर तगड़ा धन कमाऊंगा।


तभी-
तुम बहुत बड़े मूर्ख हो किशोर लाल!
आंय!
क... कौन हो तुम?
तुमने मुझे नहीं पहचाना? मैं दुर्भाग्य के देवता सिंघाल का सेवक हूं। उत्तम सिंह ने तुम्हें मेरे विषय में बताया था ना?
ओह! तो वह बूढ़ा सच कह रहा था?
हां! और सच जानकर भी तुमने सिंघाल की प्रेमिका पर बुरी नजर डाली। तुम्हें इसकी सजा मिलेगी...!
फिर भिक्षु ने अपने हाथ इस तरह आगे बढ़ाये, जैसे किशोर लाल का गला पकड़ना चाहता हो।
नहीं...!
जूं... ऊ... ऊ... ऊ...
धाड़
धड़ाम
राजकुमार नामक एक व्यक्ति अपनी कार में वहां से गुजर रहा था।
ओह! एक्सीडेंट हुआ है।


वह कार के निकट पहुंचा।
उफ...! यह तो खत्म हो गया।
ओह! यह क्या चीज है?
हे भगवान! यह तो हीरे हैं। आहा! हीरों की गुड़िया!
अगले ही पल उसके मन में लालच ने सिर उभारा...
...और गुड़िया जेब में रखकर वह अपनी कार की ओर चल दिया।
यहां से जल्दी निकल लेता हूं।
भीतर बैठने के लिए जैसे ही उसने दरवाजा खोला।
फुस्स्स
राजकुमार घबराकर पीछे हटा तो कोबरा भी कार से बाहर निकल आया।
फुस्स्स
राजकुमार घबराकर भाग खड़ा हुआ।
य... यह कहाँ से आ गया?
तभी—
धाड़
ओह...!


ब...बचाओ...
सांप...सांप...!
तू चोरी करके भाग रहा था, इसलिए यह सांप तेरा पीछा कर रहा है। तूने जो चीज चुराई है, क्या तुझे उसकी अपने प्राणों से भी अधिक आवश्यकता है?
क...क्या कह रहे हो तुम? क्या चुराया है मैंने?
इसे बता दो नागराज।
फुस्स
अगले ही पल कोबरा उछला और—
ई...ई...ई...ई...
अब बोल, तूने चोरी की है या नहीं?
हां...म...मुझे इस सांप से बचाओ! मैं वह गुड़िया वापस कर दूंगा।
इसे छोड़ दो नागराज!
ओह!


फिर वह सांप न जाने कहां गायब हो गया था।
अब मेरी बात ध्यान से सुनो। यहां निकट में उत्तम सिंह नामक एक व्यक्ति रहता है। मैं तुझे उसका पूरा पता बता देता हूं। तेरे पास जो गुड़िया है, वह अभी जाकर उसे दे आ।
ठ...ठीक है।
राजकुमार उसी समय उत्तम सिंह के घर जा पहुंचा।
यह गुड़िया संभालो।
ओह! यह तुम्हारे पास कहां से आई?
यह गुड़िया जिस व्यक्ति के पास थी, वह कार एक्सीडेंट में मर गया है। गुड़िया मुझे मिली, मगर तुरंत ही मेरे साथ कुछ रहस्यमय घटनाएं घटीं और फिर एक बौद्ध भिक्षु ने प्रकट होकर मुझे आदेश दिया कि मैं यह गुड़िया तुम्हारे पास पहुंचा दूं।
गुड़िया उत्तम सिंह के हवाले करके राजकुमार वहां से चला गया।
उत्तम सिंह भीतर आकर चारपाई पर बैठकर रोने लगा।
आह! मेरी मुसीबत फिर वापस लौट आई है। शायद यह जीते जी मेरा पीछा नहीं छोड़ेगी। अब तो इससे छुटकारा पाने का सिर्फ एक ही रास्ता रह गया है।
गुड़िया उसने तकिये के नीचे रख दी और एक रस्सी उठा लाया।
मौत ही मुझे इस मनहूस गुड़िया से मुक्ति दिला सकती है।
अगली सुबह—
ओह!


कुछ ही देर में—
पीं...
पीं...
घर की तलाशी लेते हुए जैसे ही इन्स्पेक्टर ने चारपाई पर रखा तकिया हटाया।
अरे! यह क्या है?
इन्स्पेक्टर तुरंत ही समझ गया था कि वह कोई अमूल्य चीज थी। उसने चुपके से गुड़िया अपनी जेब में रख ली।
दोपहर को घर पहुंचकर इन्स्पेक्टर विक्रम सिंह ने गुड़िया को अपनी जेब से निकाला।
इतनी कीमती चीज उस बूढ़े के घर में कहां से आई होगी? यह तो लाखों का माल है। अगर इसे हिन्दुस्तान से बाहर ले जाकर बेचा जाए तो वारे-न्यारे हो जाएंगे। हांगकांग में इसकी अच्छी कीमत मिल सकती है।
अगले दिन ही इन्स्पेक्टर विक्रम ने नौकरी से छुट्टी ले ली और हांग-कांग के लिए रवाना हो गया।
AIR I
उस रहस्यमय भिक्षु ने विक्रम सिंह के विमान को उड़ते देखा और मुस्करा पड़ा।
मोरना ने अपनी वापसी की यात्रा आरम्भ कर दी है।
INTER NATIONAL AIR PORT


हांग-कांग पहुंचकर विक्रम सिंह वहां के एक अपराधी चांग से मिला—
मेरे पास हीरों की बनी एक गुड़िया है, जिसे मैं बेचना चाहता हूं।
गुड़िया! दिखाओ।
गुड़िया देखकर चांग की आंखें फैल गईं।
ओह! बहुत शानदार चीज है। क्या कीमत चाहते हो?
पांच लाख अमेरिकन डॉलर।
यह तो बहुत ज्यादा है। मैं एक लाख दे सकता हूं।
तुमसे सौदा नहीं पटेगा।
और विक्रम सिंह वापस चल दिया।
उसके बाहर जाते ही चांग ने टेलीफोन उठाकर किसी को आदेश दिया।
एक हिन्दुस्तानी अभी-अभी मेरे घर से बाहर निकला है। उसके पास एक कीमती गुड़िया है। उसे घेर कर गुड़िया छीन लो।
ओ.के. बॉस!
विक्रम सिंह एक गली से गुजर रहा था कि—
ओह!
वह गुड़िया निकालो।
ओह! यह गुण्डे चांग ने भेजे हैं।


विक्रम सिंह खूब लड़ना जानता था।
ढिशुम
आह!
ताड़
आ... ईं... ईं... ईं...
या... हू
आह!
धाड़
विक्रम सिंह ने उन दोनों में से एक गुण्डे को पकड़कर उठाया और उसे उसके साथियों पर उछाल दिया...
धाड़
...फिर उसने पलटकर भागना चाहा...
...लेकिन—
आह!
खचाक
मर गया साला!


कुछ देर के बाद वह गुड़िया चांग के हाथों में थी।
हा...हा...हा...! पांच लाख डॉलर मांग रहा था साला।
अगले दिन चांग ने वह गुड़िया प्राचीन कलाकृतियों के एक दलाल को दिखाई।
वानचू, देखो क्या शानदार चीज लाया हूं। इसे बिकवा दो।
सचमुच शानदार है, लेकिन इसका ग्राहक आसानी से नहीं मिलेगा।
क्यों नहीं मिलेगा?
इतनी महंगी चीज खरीदना हर किसी के बस का रोग नहीं है। मैं तुम्हारी यह गुड़िया बिकवा सकता हूं, लेकिन इसके लिए हमें सिंकयांग जाना होगा।
सिंकयांग? वह तो तिब्बत में है।
हां। वहीं एक व्यापारी रहता है, जो प्राचीन कलाकृतियों की मुंहमांगी कीमत देता है। अगर तुम कहो तो मैं यात्रा का प्रबंध करूं।
अच्छी कीमत पाने के लालच में चांग सिंकयांग जाने के लिए राजी हो गया।
हैलीकॉप्टर द्वारा वह सिंकयांग के लिए रवाना हुए।
हैलीकॉप्टर का किराया मैं तुम्हारे कमीशन में से काट लूंगा वानचू।
ठीक है।
लम्बी यात्रा के बाद हैलीकॉप्टर तिब्बत के पहाड़ों के ऊपर पहुंचा।
तिब्बत के ये पहाड़ सारी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।
हां। इन पहाड़ों से सैकड़ों रहस्यमय कहानियां जुड़ी हुई हैं।


हम कब तक सिंकयांग पहुंच जायेंगे?
तुम नहीं, वहां सिर्फ मैं पहुंचूंगा!
लाओ, वह गुड़िया मुझे दे दो।
वानचू... क्या तुम पागल हो गये हो?
गुड़िया निकालो, वरना शूट कर दूंगा!
अच्छा, देता हूं!
फिर अचानक चांग ने उसके रिवाल्वर पर हाथ डाल दिया!
कमीने...!
ओह!
दोनों ही पिस्तौल के लिए संघर्ष कर रहे थे!
ओह!
उफ!
अचानक—
धांय
ईं...
ईं...
ईं...


पायलट के मरते ही हैलीकॉप्टर बेकाबू हो गया।
घर्र... घर्र...
ओह!
आ...ई...ई...ई...
फिर वह एक ऊंचे पहाड़ की चोटी से जा टकराया।
धड़ाम
हैलीकॉप्टर का मलबा सिंघाल की गुफा के बाहर आकर गिरा था।
चांग की जेब से वह गुड़िया भी निकलकर बाहर आ गिरी थी।
तभी गुफा के मुहाने से वह भिक्षु बाहर आया।
ओह! मोरला लौट आई है।
गुड़िया उठाकर वह गुफा के भीतर ले आया और उसे सिंघाल की छाती में स्थापित कर दिया।
मोरला वापस आ गई है सिंघाल। तेरा प्रेम अमर है। मोरला को तुमसे कोई अलग नहीं कर सकता।

समाप्त

मनोज कॉमिक्स के तीन और नये जांबाज सुपर हीरो



तूफान का तूफानी कॉमिक्स **बिच्छूडंक**



नये सैट के कॉमिक्स

- शैतानों का कबीला (महाबली शेरा)
- खूनी चमगादड़ (त्रिकालदेव)
- अंकल चार्ली और रहस्यमयी चेहरा
- ब्लैक हाउस भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र
- मौत की किरणें सागर-सलीम
- मौत का धमाका भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र
- जंगल का प्रेत भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र
- मोम का दूल्हा और नकचढ़ी बंजारन

आगामी सैट के कॉमिक्स

- जादूगर कोबरा (राम-रहीम)
- चार सिर शैतान के भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र
- हवलदार बहादुर और कनकटा डकैत
- आधा चेहरा भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र
- अतीत की मौत [illegible]-रहस्यमय-रोमांचक
- नागरानी का प्रतिशोध जादुई-विचित्र-लोककथाएं



इन्द्र का हैरतअंगेज कॉमिक्स **इन्द्र का जलजला**

वितरक : राजा सेल्स कारपोरेशन, 25/128, अग्रवाल मार्ग, शक्तिनगर, दिल्ली - 110007
प्रकाशक : मनोज पॉकेट बुक्स 1584 दरीबा कलाँ, दिल्ली - 110006





हंसी, धमाल,
मनोरंजन, थ्रिल,
एक्शन, सभी कुछ
एक ही कॉमिक्स में,

क्रुकबाण्ड और सुपरबॉय


R.F.N
ROCK THE NATION
RAJ COMICS


Like it..?..Buy it...save the industry....
RKO SCANS
ARJUN1345
FIND MORE AT:- www.rkoscans.co.nr